पारिजात-हरण नाट

॥ नमः श्री कृष्णाय ॥

श्लोक

ननः कृष्णविष्णोऽच्युतानन्तशार्ङ्गे
नमो रामराजीवनेत्रप्रभो ते ।
नमो ब्रह्ममूर्ते मुरारे परेश
नमो विश्ववास प्रसीद प्रसीद ॥

अपिच

खगेन्द्रं समारुह्य निर्जित्य शत्रुं
मुदा लीलया देवकीनन्दनो यः ।
प्रियं पारिजातं जहार प्रियार्थं
परेशाय कृष्णाय तस्मै नमो मे ॥

सूत्र०—पहिलेहि श्रीकृष्णक प्रणाम कये कहुँ सभासद लोकक सम्बोधि बोल ।

श्लोक

भो भोः सामाजिका ईश कृष्णस्य जगतीपतेः ।
श्रीपारिजातहरणं यात्रां सम्प्रति पश्यत ॥

अथ भनिता !

जय जय कृष्णदेव निज अंश । लीला नाशित कंश सवंश ॥
जाकेरि चरित्र भक्त-अवतंश । कमला केलि कमल कलहंस ॥
तनु इन्दिवर श्यामल चोरि । तथि परकाशित पीत पिचोरि ॥
तड़ित जड़ित यच नव घनखंड । मकरि कुण्डल मंडित गंड ॥
कनक किरीटि रतन अवभास । कुंचित चारु चिकुर परकाश ॥
रुचिकर कर्ण भुवन मन भूल । नासा नील रतन तिल फूल ॥

नयन कमल मुँह-पंकज जोड़ । एहु मिलल जनु चान्द चकोर ॥
मानिक दशन हासा तथि थोर । आरक्त अधर बन्धुलि रुचि चोर ॥
रुचिर चिबुक भेलि हय ताप । भ्रू-युग गाजी मदनकेरि चाप ॥
कुटिल अलक कुल तिलक कपोल । हृदये हेमक हार अमोल ॥
आतिम मतिम माला लुले । कौस्तुभ कंबु-कंठ मह डुले ॥
चारु उदर दर हृदय विशाल । लम्बित पंचवरन बनमाल ॥
संचर चंचर मधुकर सोहे । श्रीश्रीवत्स उरस्थल सोहे ॥
चारु चतुरभुज अंश भुअंग । रतन केउर उजोर तनु संग ॥
कंकण कनक झनक कर-मूल । करतल राता उतपल फूल ॥
अंगुलि चारु हीर हेम मोती । नवमणि निन्दित चौंदक जोति ॥
अरि अरविन्द कौमुदी कम्बु पाणि । कोकिल-कंठ अमिया झुरे वाणी ॥
नाभि कंज रंज अनुपम । विहिको जनम भेलि सोहि ठाम ॥
कटितट कनक काँची परिरम्भ । उरु करिकरवर मरकत तम्भ ॥
लम्बि नितम्ब पीत रुचि चिर । पद-पंकज झुरे रतन मंजीर ॥
नील आंगुलि यच चम्पक कोर । नखचय चारु चाँद उजोर ॥
कमल पदतल अलकत भान्ति । ध्वज पंकज यव अंकुश कान्ति ॥
पाशा लाखा सेत चामर ढोल । संचर राजहंस दुहो कोल ॥
माथे छत्र चारु शशीकान्त । बरिसे सिकर आमिया नितान्त ॥
मधुर मुरुति भकत मनपुर । मनमथ कोटि जाहे नहि तुर ॥
होइ जब नील नव घनखंड । उयरे रह रविकर परचंड ॥
पूर्णिमाक चाँद दुहो दुहो पाशा । तथि कत इन्द्रचाप परकाशा ॥
बहे दुहो धार सुरसरि नीर । उजरि बिजुरि रह तथि थिर ॥
अभिनव सूर उगत तनु माझे । ताहे छवि बक-पकति विराजे ॥
तारा झिकझिक कर बहु ठामा । तब होइ सोइ मुरुति उपमा ॥
रहु हृदिपंकज सोहि मुरारि । अब सोइ लोइ देखु विचारि ॥
कोटि कल्पतरु पूरण कामा । ऐसन ईश रहए निज ठामा ॥

ताहि चरण चिन्त चित्त लाइ । तनु चिंतामणि बिकलेहि जाइ ।।
आवे निकट नित अन्तक गरजि । लेहु हरि-चरण शरण सब बरजि ।।
जो मुँहे राम नाम नाहि अंशे । कलियुग काल भुजंगम दंशे ।।
सोहि कृष्णक नाटक उपामा । पारिजात हरण आइ नामा ।।
सकतिक साधि सुनइ सब लोइ । हरि बिनि बान्धव आन नाहि कोई ।
कृष्ण किंकर ओहि शंकरे बोल । कर अब नरसब हरि हरि रोल ।।

सूत्र०—आहे सामाजिक लोक, जे जगतक गुरु, जाहेरि सजना सकला संसार, ब्रह्मा, महेशे, बन्दित पाद-पद्म, परम पुरुष पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण रुकमिणी सत्यभामा सहित ओहि सभा मध्ये प्रवेशि कहो नरकासुर बध पारिजात हरण लीला यात्रा कौतुके करब ताहे सावधाने देखह शुनहा आतपरेपुष्प कलित नाहि नाहि । जानि निरन्तरे हरि बोल । तदन्तर सूत्र पुछत । आहे संगि, कि बाद्य बाजे ।

संगी बोल । आहे देववाद्य बाजत ।

सूत्र०—अः मिलल मिलल ।

श्लोक

प्रवेशमकरोद्देवो गोविन्दो गरुडासनः ।
रुक्मिणी सत्यभामाभ्यां सह चारुचतुर्भुजः ।।

कथा—आहे लोक, हामु जे कहलु सोहि परमेश्वर श्रीकृष्ण सभाजें यात्रा निमित्ते एथा आवत । परम सावधान हुया ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ।
इति सूत्र निष्क्रान्तः ।

प्रवेश गीत

राग सिन्धुरा—एकतालि ।

ध्रु०—अवे गरुड-केतु कयो परवेश ।
मदनक लाज हेरि रुप लेश ।।

पद—श्याम मुरति दीपित पितबासा । मुकुट कुण्डल मणि मुख परकाशा ।।
कर कंकण बनमाला उरे लोले । चरण माझे मजीर कर रोले ।।
कोटि मदन जिनि उजर मुरारि । संगे सत्यभामा रुकमिणी वर नारी ।।
शरीरक जोति जलद बिश पाश । कहय शंकर हरिदासकु दास ।।

सूत्र०—आहे सभासद लोक, श्रीकृष्ण पत्नी सब सहित कौतुके रहल रुप कहो रुकमिणी सहित एक मन्दिर रहल । सत्यभामा निज मन्दिरे रहल ।

श्लोक

पश्चात पुरन्दरो देवो नारदेन सहागतः ।
प्रणम्य केशवं सर्वं प्रोवाच भौम चेष्टितम् ।।

सूत्र०—तदन्तर, देवता इन्द्र नारद सहित आसि कहुँ श्रीकृष्णक चिरे परनाम कय कहुँ नरकासुरक विशेषता जैसे निवेदल । नारद आशीर्वाद कय श्रीकृष्णक हाते जैसे पारिजात निवेदल । रुकमिणीक माथे जगतक नाथे जैसे पिन्धायल । आहे लोक, ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग आशोवारि—परिताल ।

ध्रु०—अइरावत कन्धे वासव आवे ।
आगहि नारद हरि गुण गावे ।।

पद—सुन्दरी रमणी शची एकुपाशे । चले भ्रूभंग अंग लभलासे ।।
माथे छत्र बज्र एकु हाथे । कह शंकर गति गोपिनी नाथे ।।

सूत्र०—तदन्तर नारदक देखि श्रीकृष्ण सभाजें उठि कहाँ सपटे प्रणाम कयल । नारद हातक तोलि चिरंजीव चिरंजीव बुलि आशीर्वाद श्लोक पढ़ल ।

श्लोक

जयजय यदुदेवो देवकीनन्दनस्त्वम्
भुवनपति समस्तैरर्चिताङ्घ्रिः सदैव ।
निजजनभयहारिन् दुष्टसंहारकारिन्
असुरनरकतस्त्रान् सम्प्रतं पाहि देवान् ।।

कथा—ओहि आशीर्वाद कये श्रीकृष्णक हाते पारिजात दिये नारद ताहेक महिमा कहल ।

नारद—हे कृष्ण, अहि पारिजातक गंध तीनि प्रहरेक पथ जाइ । ओहि पारिजात जाहेर गृहे रहे धनजन विभव चाहवे नाहि । ओहि देवदुर्लभ पारिजात जो

नारि परिधान करे, से पुष्पक महिमायें परम सौभागिनी हय। ताहेक जारि चारी स्वामी कथाये जाये नाहि। अः ओहि कुसुमक महिमा कि कहब ?

सूत्र०—ओहि बुलि नारद चोवहि थारि बैठि मौन रहल।

श्लोक

श्रुत्वा कुसुम-माहात्म्यं रुक्मिणी केशवप्रिया।
प्रणम्य स्वामीचरणं पारिजातमयाचत॥

कथा—मुनिक मुखे कुसुमक महिमा शुनि रुक्मिणी परम कौतुके कृष्णक गोरि लागि करजोरि बोलल।

रुक्मिणी—हे स्वामी हामी तोहार प्रथम पतनी जानि ओहि देवदुर्लभ पारिजात प्राणनाथ हामाक देहु।

सूत्र०—ओहि बोलि जैसे कुसुम मागल तारे देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल।

गीत

राग श्रीगन्धार—जातिनान।

ध्रु०—कौतुके रुक्मिणी : नमिये स्वामीक पाये
मागे आंजुरि धरि हात।
आहे पिउ,
अब प्राणनाथ माये मिलायो मोहि
ओहि कुसुम पारिजात॥

पद—आहेर गुण शुनि मुनि मुखे माधव
साधु अतये सोयी मान।
भकत कृपाल लागु चरण तेरि
करहु कुसुम मोहि दान॥
तोहारि प्रथम पतनी परम स्वामी
जानि पूरह मोहि आशा।
धनीक वाणी शुनि हासे रसिक हरि
कहतु शंकर कृष्ण दास॥ध्रु॥

सूत्र०—तदनन्तर रुक्मिणीक अति कातर वाणी शुनि श्रीकृष्ण हाँसि हाँसि हाते तोलि प्रियाक गौरवे कोले बैठाइ कौतुके जगतक नाथे माथे पारिजात पिन्धावल। रमणीक चौंठा सफल भेल। तदनन्तरे प्रिया सहित श्रीकृष्ण सादरे नारदक वार्ता पूछत।

कृष्ण—हे मुनिराज, तोहों कुशले आवल ? अः तोहारि आगमने आजु हमार द्वारिका-पुरी पवित्र भेल। तोहारि दरशने हामु कृतार्थ भेलों।

श्लोक

कृष्णस्य वचनं श्रुत्वा विहस्योवाच नारदः।
निजभक्तस्तवैवाहं मयि मायां करोषि किम्॥

नारद—हे स्वामी कृष्ण, मनुष्य-चेष्टा देखाया सबलोक मोहिछ; तोहाक ईश्वर बोलि जानये नाहि। हामु तोहारि भकतिकबले सब जानि; हामाकु मोहिते चाव। अः स्वामी शुनह।

पयार—हे परमेश्वर जगत निवासा। हामु नारद तुआ दासकु दासा॥
भरमो दिश दश तुआ यश गाया। हामाकु आगु करथि ओहि माया॥
जगत उद्धार जाहेर चरित्र। ताहेक हामु कयल पवित्र॥
जाहेर नामे मुकुति-पद पाइ। सो हरि कर शुति नति कतिब्बाइ॥
तुहुँ जगत - गुरु - देवक देवा। तोहारि चरणे रहोक सेवा॥
मुखे जोनो न चारहु तुआ गुण नाम। मागु अतये अर तोहारि ठाम॥

नारद—हे कृष्ण, तुहुँ परमपुरुष, नारायण भूमिक भार हरण निमित्ते अवतरिछ। साम्प्रत पापी नरकासुरे देवतासबक बहुत दुःख लागये। तन्निमित्त शची सहित इन्द्रदेवता तोहारि चरणे शरण लेलहक; हे श्रीकृष्ण देखो देखो।

सूत्र०—ओहि बोलि नारद मौन रहल। तदनन्तर श्रीकृष्णक आगु परि पुरन्दर परणाम कये कहुँ, सभायें करयुरि शुति बोलल। ताहे देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल।

पयार—जय जय यादव देव। जय धाता-कृत सेव॥
जय भकत भय हारी। जय जय ईश्वर मुरारी॥
जाकेरि नाम उचारि। पाइ पदारथ चारि॥

जीव नियन्ता तुहुँ अज। बन्दो तुअ चरण-पंकज ॥
अघबक धेनुक कंस। मारल असुर सवंस ॥
हरलि भूमिकेरि भार। भक्तक हेतु अवतार ॥
साम्प्रत गोचर हमारि। बान्धव शुनह मुरारि ॥
अब नरकासुर पाप। कयलि धरि उपताप ॥
आनल स्वर्गक मारि। देवक अतये कुमारी ॥
सर्वस्व नारखे हमारि। तुआ पावे कयलु गोहारि ॥

पुरन्दर—हे स्वामी कृष्ण, पापी नरकासुरे कोन न करल? वरुणक छत्र, मणि पर्वत, ए सब काढ़ि आनल। हे कृष्ण कि कहब! मातृ अदितिक कुन्डल दोहो राखवे नाहि पारल। आर हमार दैइते कि रहल? हे कृष्ण, कोटि-कोटि ब्रह्माण्डेश्वर तोहारि चरण चोरि हामार गति नाहि। बाप जगन्नाथ, त्राहि त्राहि।

सूत्र०—ओहि बोलि कृष्ण आगु कान्दि कान्दि पुरन्दर लुटि परल।

श्लोक

दृष्ट्वा दुःखं महेन्द्रस्य श्रुत्वा च भौमचेष्टितम्।
आश्वास्य वासवं हस्ते गृहीत्वोवाच केशवः ॥

सूत्र०—तदन्तर महेन्द्रक दुःख देखिये, परम कृपामय नारायण हाते धरि तोलि इन्द्रक आश्वासि बोलल।

कृष्ण—हे महेन्द्र, तोहों ताप तेजह। तोहारि बैरी पापी नरकासुर, से गतायु भेलि। ताहेक मारि देवता-प्रयोजन सत्वरे साधब। अहि निश्चे जानि छुडु आनन्द हुया सत्वरे अमरावती चलह। नरकासुर बधिते हामु आजु पयान करब।

सूत्र०—से समये नारद आसि कहुँ इन्द्रक बोल।

नारद—हे पुरन्दर, श्रीकृष्ण जेखन अंगीकार कयल तोहार शत्रुक सेखने कन्धपात भेल। इहात शंका नाहि, तुहुँ आगु हुया चलह। तोहाक निमित्ते श्रीकृष्णक कातर कय हामु पाछु लया आवब। चिन्ता नाहि, चलह।

सूत्र०—ओहि निर्भय वाणी शुनि वासव श्रीकृष्ण नारदक प्रदक्षिण करि कहुँ परि परणाम कयल। विदाय लैया ऐरावते चरि इन्द्र चलल।

श्लोक

मुनिर्माधवमाहेदं गन्तुं त्वरय केशव।
द्वारवत्याः श्रियं पश्यन्नेष्यामि चान्तिकन्तव ॥

नारद—हे कृष्ण तुहुँ चलिबाक सत्वरे साजह, हामु तोहारि द्वारकापुरीक कौतुके पेखिये एहखाने आवब।

सूत्र—ओहि बुलि नारद हरि गुण गाइ जैसे चलहि ताइ देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल।

पयाड़

श्रीगान्धार राग—परिताल।

ध्रु०—चललि नारद हरि गुण गाइ। भरमे द्वारकापुरी सम्पत्ति चाइ ॥
पद—रतने रचित यत हरिक आवासा। जैछे सुरपुर कर परकाशा ॥
पेखल पाछु भुवन अनुपामा। आसने थिक बैठि सत्यभामा ॥
पूर्णिमाक चाँद वदन परकाशा। चिरंजीव बोलि नारद करु हासा ॥
देखि मुनिक धनी अवनत काइ। परि परणाम कयलि पुनु माइ ॥
जीवतु जीवतु नारद बोल। डाकि करहु नर हरि-हरि बोल ॥

सूत्र०—तदन्तर दासुगा चयड़ि पारल। मुनि आसन भिड़ि तथि बैठल।

श्लोक

नारदः सादरं देवीं सम्बोध्याह हरिप्रियां।
कृष्णस्य कर्मविषमं सत्यभामे निबोध मे ॥

नारद—अः हे देवी सत्यभामा, तोहारि स्वामी श्रीकृष्णक बड़ि विसम चेष्टा देखल। हा हा माय, तुहुँ दुर्भागा भेलीह। हामु आजु से जानलु।

सत्यभामा—हे मुनिराज, तुहुँ कि कहयीछ? हामु किछु बुझये नाहि।

नारद—हा हा तोहाक विधि वंचल। हे माय, कि कहब? कहिते बड़ दुख लागए।

सूत्र०—ओहि बोलि हेठ माथे ठेस कय रहल मुनि।

श्लोक

सत्यभामाभवाद्भीता निशम्य मुनिभाषितम्।
ब्रूहि कथय किं कुत्र तं पृच्छति पुनः पुनः ॥

कथा—शुनि भीत हया देवीः करयुडि बोलल ।

सत्यभामा—हे मुनिराज, हामु आजु मोह सम सौभागिनी आवरि नाहि । से स्वामी कृष्ण हामाक चाडि कतिहु आवे नाहि । तुहु आजु कोनो ठाने कि देखल कि शुनल ! हामाक शपत, सत्वरे स्वरूप बात कह । चित्त वरि उद्वेग करये, मुनि मौन चाहह ।

श्लोक

दृष्ट्वा देव्याः सुनिर्बन्धं कथयामास सादरम् ।
कृष्णस्य चरितं सर्वं रुदन्निव स नारदः ॥

सूत्र०—देवीक निर्बन्ध देखि मुनि बोल ।

नारद—हा हा माय, कि कहब ? ए सब कथा कहिते दोष । हामु देव दुर्ल्लभ पारिजात पुष्प स्वर्ग हन्ते आनि कृष्णक हाते देलो । से पारिजात जे नारी परिधान करे, से पुष्पक महिमाये परम सौभागिनी हय । इहा जानि हामु बोलल्, ओहि पारिजातक जोग्य देवी सत्यभामा । तथि कृष्णे कयलि कि ! तोहाक कटाक्ष करिये आपुन हाते पुया रुक्मिणीक माथे परम सादरे से दिव्य पारिजात पिन्धाबल । आः तोहाक जीवनक धिक धिक ! सतिनीकि अभ्युदय देखि कि निमित्ते प्राण धरह ! माता तुहुँ जीवन्ते मरल ; हा हा बिस्तर कि कहब ॥

श्लोक

मुनेर्वचनमाकर्ण्य शोककोपपरिप्लुता ।
मूर्च्छिता पतिता भूमौ यथा वाताहता लता ॥

सूत्र०—तदनन्तर नारद मुखे सतिनीक महोदय शुनि कहुँ कोपे अपमाने आन्धारि देखिबे देवी सत्यभामा मूर्च्छित हया पडल । जैचे लवंगलताक वाते उपारल, तइत । केश मुकत भेल, मुखे वचन हरल, नासत प्राणवायु नाहि खेले । पेखि सखि इन्दुमती हा हा प्राण सखि मरल बुलि बाहुँ मेलि धरि कहुँ शिरे जल सिंचल । आँचोले बिचि कान्दि कान्दि प्रबोध बोलल ।

इन्दुमती—हे प्राण-सखि, सतिनीक अपमाने कि मरिते चाव ? ओहि कोन व्यवहार ? आः से प्राण माधव स्वामी तोहारि मान साधब नाहि ओहि दुरन्त चिन्ता परिहरि उठह उठह ।

श्लोक

कथंचिद् चेतनं सा लब्ध्वा देवी पुनः पुनः ।
विनिश्वस्यापमानेन रुरोद सखीसन्निधौ ॥

कथा—से देवी सत्यभामा कथंचित चेतन लभिये घन घन निश्वास फोकारि जैछे संताप कयले ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग कल्याण—जतिताल ।

ध्रु०—मानिनि मार ; नयन पंकज झुरे वारि ।
फोकारबे श्वासा, हासा भेलि देहा,
घन घन देखो आन्धियारि ॥

पद—सतिनीक उदये हृदये दहे आगि
अधिक मिलये मन तापे ।
धिक अवजीवन जीवन मोहे अभागि
रागिनी करत विलापे ॥
हरि हरि पीउ भेरि वैरी अधिक भेलि
अतये कयलि अपमाना ।
धरणी लुठि लुठि विलपति बाला
कृष्ण किंकरे रतमाना ॥

सूत्र०—देवी सत्यभामा, ओहि सकरुण विलाप-अपमान कये थिक तदन्तर कहह थिर नारद पुनर्व्वार कृष्णक आगु गिया जे बोलल ताहे शुनह ।

नारद—आहे श्रीकृष्ण तुहुँ एथा कोन सुखे रहइछ ? से पुया सत्यभामा पारिजातक निमित्ते अपमाने अन्नपान सब चाडल, परम तापे मरयिछे । हा हा चक्षुये देखिते कि पाव कि नाहि पाव । देव, सत्वरे जाव ।

श्लोक

मुनेर्वचनमाकर्ण्य माधवो भगवान्स्वयः ।
द्रुतं तस्या गृहं प्रागात् प्रियायाः प्रेमविह्वलः ॥

सूत्र०—मुनिक मुखे प्रियाक दुख शुनि श्रीकृष्ण प्रेमविह्वल हुया मुनिक कातर करि कहु बात पुछि जेंछे सत्यभामाक समीप चलल ताहे देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल।

गीत

राग सुहा—अतिमान ।

ध्रु०—मुनि कहियो कहियो कपट परिहरि ।
प्राणे कि जीयब मोर गुणेर सुन्दरि ॥
पद—मानिनी न सहे तिलेको अपमान । मेरि अपराधे केंछे धरब प्राण ॥
प्रियाक सन्तापे तापे दहे शोक आगि । कुसुम ना दिया भेलो तिरी वध भागि ॥
झुरइते नयन प्रियाक पाइला कोल । देखि आकुल कृष्ण किंकरे बोल ॥

सूत्र०—श्रीकृष्ण प्रेमे विह्वल हुया प्रियाक देखल, लोटके मुख मलिन । घन घन निश्वासा फोकारि माटि लुटि रह । ताहे पेखि श्रीकृष्ण हा हा कि भेलि बोलि आंकोआलि धरल । नयनक नीरे झुरावे, आश्वासि बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे प्रिये, मोटा एक फूल रुक्मिणीक देलो । से निमित्ते यदि अपमान करह, तबे उठह तोहाक एक शत पारिजात देवब । रुक्मिणी, जाम्बवती तोहाक सम सौभागिनी हवे नाहि । तोह हामाक प्राण सम प्रिया जानि ताप तेजह । तोहारि दुख देखि हामार हृदयें सहबे नाहि । प्रिये हामाक शपत उठह उठह ।

श्लोक

प्रियं प्रणयकोपेन निःश्वसन्तीह सतः सती ।
धूर्त्तालापैः दुर्भगांश मां किमर्थं त्वन्विकत्थसे ॥

सूत्र०—तदन्तर कृष्णाक वाक्य शुनि देवी सत्यभामा स्वामीक पिठि दिये कहों हेंठ माथ सकारुण क्रन्दन कये बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामी, हामि दुर्भागाक कपट वाक्ये कत कदर्थना करह ? ये तोहार प्रियतमा ताहेक समीप चलह । हामाक कोन प्रयोजन धिक ।

सूत्र०—ओहि बोलि बहुत विलाप कये कृष्णाक ये बोलल ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ॥

गीत

राग श्रीगन्धार—जतिताल ।

ध्रु०—चेतन हे बुझलहुँ तुहुँ, जानलोहों तोहो व्यवहार ।
अतये चातुरि चोरि चलह बहुरि हरिए ।
याहा प्रिया रमणी तोहारा ॥
पद—तोहारि कपट कृष्ण नाबुझि मानलो हामु ए
नाहि सौभागिनी सम मोइ ।
चैछन पीरिति रीति सबहि विदित भेलिरे
आजु जानलों मति तोइ ॥
ओहि अपमाने प्राण नाहि धरब हामुरे
छोड़ल जीवनक आशा ।
आगु पिउक पहि बहु विलपति बाला रे
कहतु शंकर हरिदासा ॥

सत्यभामा—हे स्वामी हम दुर्भागा । सतिनीक अधीन तुहु, हामाक कतये विकर्षना करह ? ओहि अपमाने हामु प्राण राखब ? आइ सञ्च हामाक जीवनक धिक धिक ।

सूत्र०—ओहि बोलि देवी कान्दि कान्दि मूर्च्छित हुया पड़ल ।

श्लोक

कुर्व्वन् हाहारवं रामामालिंग्याकुलमानसः ।
प्रियवाक्यैस्तु तां शान्ति सांत्वयामास माधवः ॥

सूत्र०—ताहे देखि श्रीकृष्ण हा हा बोलि बाहु मेलि धरल । प्रियाक दुख देखिये मरम चड़ल । कमलनयनक नीर झुरावे, प्रेमे प्रबोध बोलल ।

पयाड़—प्रियाक दुख देखि न सहे शरीर । कमल नयन भरि झुरि बहे नीर ॥
आलिंगि प्रियाक चापि धरि कोल । करि आश्वासा वचन हरि बोल ॥
हे हे प्राण-प्रिया शुन बात । देवहु नाहि तोहों पारिजात ॥
अत अपराध सहब अब मोहि । तुया सम सौभागिनी नाहि कोइ ॥

रुक्मिणीक देल गोटाय एक फूल । ताहेक लागि तुहुँ अतये आकुल ॥
पारिजात तरु समूल उपारि । रोपन करब आनि तुया बाड़ि ॥
यत मोहि थाकब नाहि पतिआशा । कहलु सत्य सत्य शुन भाषा ॥
अब तेजहु ताप कुमारि । न सहे हरि दुख देखि तोहारि ॥
हमाकु शपत खेइलहु माथे । उठह उठह पृया टेरि, धरु हाते ॥
कर काकुति नति जगतर ईश । रमणिक मने किछो मिलल हरीष ॥
परम ईश्वर कर कातर पृयाक । देखु अद्भुत भकति महिमाक ॥
ब्रह्मा महेशक दाक कर सेवा । माथे खेइ मड़ोल सहि देवा ॥
कृष्णक लीला बुझये नाहि पारी । पूर्ण काम हरि कि करब नारी ॥
भकति कयलि हरिक मन मोल । जानि करह नर हरि हरि रोल ॥

सूत्र०—तदनन्तर सखि इन्दुमती बोल ।

इन्दुमती—हे प्राण सखि, परम ईश्वर तोहारि स्वामी माथे लेइ थक अतये कातर करेछे ? आर कोन मान साधिते रहल ? सखि ताप तेजह, उठह उठह ।

सूत्र०—देवी स्वामीक अतये विनय वाणी शुनि कहुँ किंचित चित्त शान्त भेल। श्रीकृष्ण ताहे देखि आलिंगि तोलि बैठावल । पीत वस्त्रे शरीरक धूलि भाड़ल, केश बान्धल, निज हस्ते कर्पुल-ताम्बुल भुंजावल ।

श्लोक

ततो देवी सत्यभामा कृष्णवाक्यामृतेन सा ।
प्रीता प्रसन्नवदना प्रणम्याह प्रियं हरिम् ॥

सूत्र०—देवी स्वामीत महामान लभिये अति प्रसन्नमुखी हया श्रीकृष्णक प्रणामि बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामी हामाक पारिजात तरु दिते तुहुँ सत्य कयल जानि विलम्ब छोड़ि ऐखने आनिया देव । यावे पारिजात नाहि देखु तावे घारी प्रवेश नाहि, हामु सत्य कये बोललु ।

श्रीकृष्ण—हे पृये, पापी नरकासुरे देवता सबक जिनिये सर्वस्व आनल । आगु ताहे मारि देव कार्य साधो, पाछु पारिजात आनो ।

देवी—अः स्वामी उचित कहल, आगु देव कार्य साधि सोहि याथाए पारिजात आनह, हामु तोहार संगे चलब ।

श्रीकृष्ण—हे पृये, तुहुँ स्त्री जाति, युद्धक समये तोहारि गमन उचित नहे ।

देवी—हे स्वामी, हामार बहुत सतिनी, इचार पारिजात आनि कोन स्त्रीक देयब ताहे बुझये नाहि । हामु कदाचितो तोहारि संग नाहि चारब ।

श्रीकृष्ण—हे पृये, तुहुँ यदि हामार संगे चलब तव सत्वरे साजह ।

श्लोक

कृष्णमभ्येत्य भगवान जगाद नारदस्तथा ।
ज्ञातं किल भवान् भार्य्याभक्ति-सक्तोहसि केशव ॥

कथा—नारद चक्रोधभाइ ।

नारद—हे कृष्ण, जानल तुहुँ स्त्रीक लाड़िका । देवकार्य सब परि रहल, तोहार भार्य्याक मातु बुलिते सब दिवस गेल ।

श्रीकृष्ण—हे मुनिराज, स्त्री बुझये से नाबुझे । कि करब ; कुमारिक हात छेड़ाइते पारये नाहि । हे मुनिराज, ऐ चलइछे । क्रोध नाहि करबि ।

सूत्र०—ओहि बुलि श्रीकृष्ण अति सत्वरे यात्रा कर चलल ।

श्लोक

सहर्षमकरोत् कृष्णः प्रयाणं प्रियया सह ।
धनुष्टंकारघोषेण दश दिशिः प्रकम्पयन ॥

कथा—श्रीकृष्ण धनुष्टंकारे दशोदिश कम्पाइ पृया सहित येछे पयान कयल ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग माउर धनश्री—एकतालि ।

ध्रु०—कयलि पयान यदुराइ । करे सारंग संगे पृया चलि जाइ ॥

पद—श्यामल अंग सुरंग पीतवासा । बिजुरी उज्वल नव घन परकाशा ॥
अरुण चरण मंजीर करु रोल । ताहे मजोक मन झंकरे बोल ॥

कथा—श्रीकृष्ण ओही प्रकारे पिया सहित प्रयाने चलछे । से समये नारद आसि बोल ।

नारद—हे हरे, तोहो सम स्त्रीजीत पुरुष कतहो ना देखि । युद्धक समये स्त्रीक चोरने नाहि यार । तुहुँ जगतगुरु तोहाक जश गाइ शीनियो लोकक वेढाये, अः हमाक लाज भेल ।

कृष्ण—हे मुनिराज कि करब, पारिजात निमित्ते सत्यभामा प्राण चाहय, उनिकर निर्बन्ध कत सहबो ।

नारद—हे कृष्ण, कामातुर पुरुषक ऐछन अवस्था । स्त्री जे आशा करे, से अवश्ये करिते लागे । से होक, से कामरूप नरकासुरक पाट, ओहि द्वारका हन्ते स्वभावे मास चारिक पथ । स्त्री लया याहिते वत्सर दुइ चारि पावब । अः देवकार्य भल्ल सत्वरे साधल । एक कर्म करह, तोहाक वाहन गरुड पक्षिराज ताहेक आशा करह । ताहेर स्कंधे चढ़िये सत्वर नरकासुरक मारह ।

सूत्र०—मुनिक वाणी शुनि श्रीकृष्ण पुत्रक बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे प्रिये, मनि भल्ल कहल ।

देवी—हे स्वामी, हामितो पावे हाटिते पारबे नाहि । ता सुनि श्रीकृष्ण वाहनक स्मरल । आहे गरुड पक्षिराज, सत्वरे आव सत्वरे आव ।

श्लोक

आहूयागत्य गरुडो नत्वा कृष्णं कृतांजलिः ।
मम स्कंधं समारुह्य जहि भौमं दुराशयम् ॥

कथा—गरुड बोल । हे स्वामी, हामु थाकिते तोहों पावे वेढायब ! अः हामार स्कंधे चढ़ि पापी नरकासुर वध गिया ।

तदनन्तर श्रीकृष्ण सभार्ये गरुड कन्धे चढ़ि परम लीलासे चललि ।

श्लोक

प्राग्ज्योतिषं सोऽहरि अवेन जायया
सुपर्णमारुह्य ययौ जनार्दनः ।
क्षणेन सम्प्राप्य पुरं परेशो
महोत्सवैः शंखरवं चकार ॥

कथा—श्रीकृष्ण गरुड वाहने वायुवेगे कामरूप पाइ पाँचजन्य ध्वनि कयल । ताहे शुनि नरकासुर खेदि आयल, श्रीकृष्ण येछे वध कयल, ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

पवाड़—राग कानड़ा ।

चललि गोविन्द गरुडक कन्धे । नरक मारिते कयलि प्रबन्धे ॥
वायुक वेगे चललि पक्षिराज । लिलेके पावल कामरूपराज ॥
फुंकल शंख हरि बारे बारे । शुनि शत्रुक भेल हृदय विदारे ॥
जानलु आवल माधव धाइ । गरजे दानव युद्धक लाइ ॥
समरक साजि बजावय ढोल । घर घर मार मार करे बहुरोल ॥
धावे मुर नरकासुर रागि । खाण्डा फिंकावय कृष्णक लागि ॥
हरि टंकारल सारंग भिड़ि । बरिखिल वाण दैत्य कहाँ पीड़ि ॥
काटल बाहु कन्ध कर शिर । मारल हरि सब दानव वीर ।
पेखि पलावत दानव असुर । वाण प्रहारिये मोरल मुर ॥
कोपे चक्र खेपि जगन्नाथ । काटल दारुण नरक माथ ॥
देखि देवक उत्सव बहुल । बाजे दुन्दभि बरिषय फूल ॥
जय जय यादव करे बहु रोल । सामाजिक सब हरि हरि बोल ॥

सूत्र०—से मुर नरकक मारि कहुँ श्रीकृष्ण पश साधल । देखि देव सब आनन्दे दुन्दभि बाजाइ । जय कृष्ण जय बोलि शिरे कुसुम बरिषल । श्रीकृष्ण सभार्ये आनन्दे रहल ।

श्लोक

ततो वसुमती पौत्रं पुरः स्थाप्य हतात्मजा ।
विलपन्ति तदा कृष्णं नत्वा प्रोवाच दुःखिता ॥

वसुमती—नरकपुत्र वध भेल देखि वसुमती परम सन्तापे ताहेक पुत्र भगदत्त शिशुक आग कय कहो कृष्ण दर्शन निमित्ते येछे चलल, आहे लोक ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग माउर धनश्री—एकतालि ।

ध्रु०—पिउक समीप चले माइ, हरिदरशन चले माइ ।
शिशु समे वसुमती लहु लहु गति याइ ॥

पद—सुतक संतापे तनु भेलि हासा । लोरके लेपित मुख फोकारे निश्वासा ॥
स्वामीक कह पाबे परि परणाम । कहनु शंकर गति भेरि राम ॥

कथा—ऐसन शिशु समे वसुमती आसि कहुँ श्रीकृष्णक परि परणामि कर जोड़ि बोलल ।

वसुमती—हे स्वामी श्रीकृष्ण, कोटि कोटि ब्रह्माण्डेश्वर परम पुरुष पुरुषोत्तम तुहुँ जगत-गुरु । तोहाक द्रोह करि पापीपुत्र नरक निज पापे नाश गेल । ताहाक पुत्र ओहि शिशु भगदत्त नातिक तोहार पाये, समर्पल । आहेक रक्षा करह; हमार सन्तति रहोक । तोहारि चरण पंकजे कातर कये अतये प्रसाद मागु गोसाईं ।

सूत्र०—ओहि बोलि वसुमती, बहुत विलाप श्रीकृष्णक आगू कयल । ऐछन करुणा वाणी शुनि नारायण वसुमतीक आश्वास कय बोलल ।

श्रीकृष्ण—आहे वसुमती, तोहो ताप तेजह; तोहारि पुत्र नरकासुर भूमिक भार भेलि । से निमित्तें हमाक मारि तोहार भार दूर कयल । तोहारि वचने ओहि भगदत्त शिशुक कामरूप पाटे राजा पाटब, तुहों चिन्ता नाहि करब ।

सूत्र०—ओहि बुलि श्रीकृष्ण वसुमतीक आलिंगि आश्वासिये अन्तपुर प्रवेशि कहों भगदत्तक राज्य अभिषेक कयल । षोडश हाजार कन्या ताहेर वारील पाइ द्वारकापुर पठायल, अदितिक कुण्डल, वरुणक छत्र, मणि पर्वत लोया, गरुड़क कन्धे सत्यभामा समे स्वर्गक कौतुके चलल ।

श्लोक

ततः सन्निकर्टं दृष्ट्वा स्वर्गं कृष्णो मुदायुतः ।
दध्मौ शंखं पाञ्चजन्यं हर्षयन्निव देवताः ॥

सूत्र०—पूर नरकासुर मारि श्रीकृष्ण स्वर्ग समीप पाइ परमानन्दे शंखध्वनि कयल । ध्वनि शुनि जानल देवता सब, अः हमार स्वर्गक लागि श्रीकृष्ण आयल । परम हरिषे जय जय बोलि दुन्दुभि बजाइ शिरे कुसुम बरिखिल । ताहे पेखि सत्यभामा पिउक पूछत ।

सत्यभामा—आहे स्वामी, ओहि कोन स्थाने पायल हामु ? जे दुन्दुभि बाजइ कुसुम बरिषे ऐ सब के ? हामाकु परिचय कराव ।

श्लोक

कृष्णःप्राह प्रिये पश्य इमाममरावतीपुरीम् ।
आगता देवता एताश्चां मां देवी दिदृक्षया ॥

कृष्ण—हे देवी, तुहुँ नाहि जानह, ओहि अमरावतीपुरी, एहि देवता सब हामाक देखिते आयल, देखो ओहि ऐरावत कन्धे वासव थिक । उनिकर महादेवी ओहि शची, ऐसब दिग्पाल, सिद्ध विद्याधर ।

देवी—हे स्वामी, जे विमानक उपरे प्रकाश करेछे ओहि कोन वृक्ष ?

कृष्ण—हे पूये, नाहि जानह ? जाहेर निमित्तें मानिनी होइछे से पारिजात तरु ओहि ।

देवी—(हर्षमाह) अः हामार मनोरथ सफल भेल । ओहि पारिजात पुष्प धरिबे सतिनीसबक माझे हासवेश करि बेड़ायब । हे स्वामी सत्वर करो ।

श्लोक

ततोऽद्रति कौतुकं दृष्ट्वा इन्द्र आगत्य सादरम् ।
दोर्भ्यां देवं परिष्वज्य जगाद मधुरं वचः ॥

सूत्र०—तदनन्तर इन्द्र आसि कहुँ गौरवे कृष्णक धरल शची सत्यभामाक आलिंगि सत्कार कयल ।

इन्द्र—हे कृष्ण, पापी नरकासुरक मारि हामाक कृतार्थ कयल । वार वार तुहुँ उद्धार करह । तोहाक गुण बुझबे नाहि पारि ।

सूत्र०—ओहि बुलि प्रेमलोटक भुरये इन्द्र मौने रहल ।

श्लोक

अदिति मातरं पश्चात् सभार्यौ जगदीश्वर ।
प्रणम्य देवमातेहदादमृतस्राविकुण्डले ॥

कथा—तदनन्तर श्रीकृष्ण इन्द्र सहित अदिति मातुक प्रणाम कवे कहुँ अमृत कुण्डल दोहो निवेदल। शची सहित सत्यभामा अदिति शाशुक जानुधारि प्रणाम कयल।

श्लोक

ततः सा देवजननी कृष्णं मत्वा महेश्वरम् ।
बद्धांजलिः जगन्नाथं स्तुती देवि मनोदधे ॥

कथा—अदिति श्रीकृष्णक परम ईश्वर जानिये येछे तुति आरम्भल ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ॥

पयाड़

जय जय जगत-निवासा । जय जय असुर विनाशा ॥
जय छेदक भय पाशा । जय तारक निज पाशा ॥
जय जय ईश्वर मुरारि । जय जय असुर संहारि ॥
जय जय सारंग - धारी । जय जय ब्रह्म अधिकारी ॥
जय जय जगतक धाता । जय जय पालक धाता ॥
जय जय भकतक त्राता । जय जय मुकति दाता ॥
जय जय यादव राजा । जय जलधर तनु-श्यामा ॥
जय जय पूरण मनकाम । जय भयतारक नाम ॥
करु करुणा यदुराइ । लेलों शरण तुवा पाइ ॥
परम पुरुष करु त्राणा । तुवा विने गति नाहि आना ॥
भव-बंधन चोड़ मेरि । कर ओहि तुति कर योडि ॥
करलि धारि परिणाम । सबहि बोलहु राम राम ॥

श्लोक

आदित्या ईश्वरज्ञानं निशम्य मधुसूदनः ।
मोहनार्थं निजमायां ततान जनमोहनीम् ॥

सूत्र०—तदनन्तर अदितिक ईश्वरज्ञान देखिवे वैष्णवी माया विसारि अदितिक मन मोहित करिये श्रीकृष्ण कर योरि प्रणाम कव बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे माता, तुहों हामार परम देवता । आमाक सर्वथा आशीर्वाद करवि ।
सूत्र०—अदिति शुनि कहुँ परम सकरुणचिते कृष्णक गले धरि कहुँ बुलिते लागल ।
अदिति—हे पुत्र, तुहुँ चिरंजीव हव । हामाक वरदाने देवता असुर तुहाक जिनिवे नाहि पारव ।
सूत्र०—तदन्तर श्रीकृष्ण देविस विदाय कयल । वरुणक छत्र मणिपर्वत इन्द्रक हाते समर्पल; देवतागणत विदाय करि कहों नारद सहिते सभार्य परिवर्त्ति येछे चलल ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग गौरी—जतिताल ।

ध्रु०—लीलागति याइ, भुवन भुलाइ मधुर मूरति मुरारि ।
लवलासे चले रंगे संगहि वर नारि ।
पद—उरे वनमाला मानिक मणि वयन ईसत हासा ।
नव जलधर सोभा तनु पीत अम्बर भाषा ॥
पद पंकज मंजीर रोले, पल्लव परकाशा ।
भकति मुकुति हेतु कहतु केशव दासा ॥
सूत्र०—ऐचन मधुर मुरुति श्रीकृष्ण परम लीला गति स्वर्ग वासीक मन मोहि कौतुके चलल। तदनन्तर ये कथा भेल, ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

श्लोक

धृत्वा वस्त्रे पतिं प्राह सती रोष समन्विता ।
क यासि पारिजातं त्वं नानीय मधुसूदन ॥

सूत्र०—तदनन्तर देवी सत्यभामा कृष्णक पीत वस्त्रे धरि कहों महाक्रोध हया बोलल ।
सत्यभामा—हे स्वामी, तेहुँ भल सत्य कयल । पारिजात नालया तुहुँ काहा जाव ? तोहाक चित्त बुझवे नाहि ।
श्रीकृष्णक—हे प्रिये हामु विचोरल दोष नाहि धरवि । श्रीकृष्ण नारदक बोल । हे ऋषिराज, तुहुँ सत्वरे याव । इन्द्रत खोजि पारिजात वृक्ष पूजाक निमित्ते सत्वरे आन गिया ।

सूत्र—कृष्णक वाणी शुनि नारद चलि गिया इन्द्रक बोल ।

नारद—हे देवराज, श्रीकृष्ण तोहार पारिजात खोजल । सत्यभामाक निमित्त आनि सत्वर दिआ पठाव ।

सूत्र०—नारदक वाणी शुनि परमक्रोध होया शची उत्तर देलइ ।

शची—अः अभाग्य कपाल ! इन्द्रानी शचीक पारिजात कथाक, मानुषी सत्यभामा पिन्हित साध गेल ? ऋषिराज बोल गिया; यदि अनेक पुण्य कय कहुँ अमरावतीक अधिकारिनी हय तवे पारिजात परिधान करिते पावे; हमार पारिजात इन्द्रे दिते पारवे नाहि ।

इन्द्र—हे ऋषिराज, देवस्त्रीक पारिजात किमते दिते पारि ? स्त्रीक कथा कृष्णते विदित, बोल गिया ऋषिराज ।

श्लोक

नारदस्तु ततोऽभ्येत्य भगवानाह केशवम् ।

इन्द्राण्या वर्णितं यत्तत् कृष्णे सर्व्वमवर्णयत ॥

सूत्र०—तदनन्तर नारद परिवर्त्ति आसि कहुँ शची जे बोलल, कृष्ण सत्यभामाक आगु सब कहल ।

नारद—हे कृष्ण, पारिजातक निमित्त तुहुँ पठावल, इथु बड़ि लाज भेलो । सत्यभामाक बहुत गालि परावल मात्र । पारिजातक नाम शुनि शची कोपे बोलल— अः कथाक मानुषी सत्यभामा शचीक पारिजात पिन्धिते इच्छा करल । अभाग्य कपाल; यम तप जप आचरि जन्मान्तरे अमरावतीक अधिकारिणी हय तव पारिजात पावब बल गिया । हे कृष्ण, देवीक धिक्कार शुनिये हृदय दहे, हा हा कि भेलि ?

सूत्र०—ताहेक शुनि सत्यभामा कोपे कम्पमान हया बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामी, हामाक कदर्थिते तोहों आनल । दानवक वेटि शची, ताहेक चाडु कय पारिजात नेबब । अः धिक्कार होक । हे प्राणनाथ काहेक भय थिक ? सत्वरे पारिजात आन गिया ।

नारद—अः देवी भल कहल । हे श्रीकृष्ण सत्वर पारिजात आनह ।

श्लोक

निशम्य सत्यभामाया वचनं कंजलोचन ।

जहार सहसागत्य पारिजाततरुं हरि ॥

सूत्र०—तदनन्तर श्रीकृष्ण प्रियाक वाक्य शुनिये तत्काले पारिजातक समीप चापि सनूलि उपारि आनल । देखि रखीया सब कोलहाल करे बोलल ।

रखीया—हे कृष्ण, शचीक पारिजात निते तोहारि कोन वेभहार ।

सत्यभामा—अये रखीया सब, तोहाक शचीत कह गिया सत्यभामा पारिजात निया याइ, अब यत शकति थिक राखोक आसिया ।

सूत्र०—शुनि रखीया सब इन्द्रशचीक प्रणामि कहल ।

रखीया—हे माता शची, तोहारि पारिजात तरु सत्यभामा बड़ाइ करिये स्वामीक हाते हरि निया याय, जानि ये बुझाइ ता करह ।

श्लोक

पारिजातस्य हरणं निशम्य कुपिता शची ।

पतिं पुरन्दरं प्राह धिगस्तु तव विक्रमम् ॥

सूत्र०—पारिजात हरण शुनि शची कोपे पुरन्दरक बोलल ।

शची—हे स्वामी तोहो विद्यमान थाकिते हामाक पारिजात मानुषी निया याइ । आः तोहाक धिक्कार थिक । वज्रक धिक्कार होक ।

सूत्र०—ओहि शुनि इन्द्रक आगे बहुत विलाप करल ।

इन्द्र—हे प्रिये तुत्र चोइद, हामाक आगु कृष्ण कोन हय । ताहेक जिनि पारिजात एखने आनव, चिन्ता नाहि करवि ।

सूत्र०—ओहि शुनि इन्द्र परम आरम्भे साजि धनुशर धरि कहुँ देव सब सहित शची समन्विते ऐरावत कन्धे चढ़ि आवल इन्द्र ।

श्लोक

गत्वा सत्राजितसुतां प्रोवाच कुपिता शची ।

नेष्यसि त्वं पारिजातं किन्तु वज्रधरे स्थिते ॥

शची—अये सत्राजितक कुमारि, तुहुँ मानुषी हया हामार पारिजात निया यास ।

अः तोहाक अभाग्य मिलल, अब वज्रधरक हाते सवंशे नाहि मारब तब सत्वरे पारिजात चोड़ब ।

सूत्र०—ओहि बोलि ऐछे गरजल ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग आसोआरि—खरमान ।

ध्रु०—मानुषी साहस ऐछन तोहारि ।
हरसि कुसुम हामारि ॥

पद—स्वामी पुरन्दर वीर वज्रधर, आछन्त दैत्य अन्तकारी ।
पारिजात तरु चोरह मोरा, राखहुँ जीवन कुमारी ॥
तोहारि स्वामी माधव मानुष, कयलि गरब ताहे लागि ।
आसब आगे सोहि कोन होइ, कह शची एछन बड़ाइ ॥

शची—आहे सत्यभामा, तोहारि स्वामी माधवक कथा हामु सब जानी । ओहि गोपी-विहाल गोपाल । उनिकर आगू गोकुलक स्त्री नाहि रहल । देखू कंसक दासी कुब्जि ताहेक हातक एड़ावल नाहि । ताहेक आर कि कहब ? ऐछन अनाचार कृष्णक गरब कबे कहाँ हामाक पारिजात निया जाय ?
अः वज्रपाते सवंशे नाश भेलि, जानवि ।

श्लोक

निशम्य गर्ववाक्यं सा सत्यभामा हरिप्रिया ।
कोपेन कम्पितवती शचीसाभाष्य वल्गति ॥

सत्यभामा—आये इन्द्राणी, जगतक परम गुरु हामार स्वामी जाहेर नाम सुमरिते महा महा पापी सब संसार निस्तरे, ताहेक अतय निन्दा करह ? अये निलजिनी मरिते न जान ! तोहारि स्वामी इन्द्रक कथा कहिते घृणा से उपजे । देखो अमरावतीक यत वेश्या तोहाक स्वामीक से नाहि आण्डल । तोहारि स्वामी कयलि कि । गौतम ऋषिक भार्या अहल्या, ताहेक माया करि कहुँ जातिभ्रष्ट कयल । तन्निमिते सब शरीर दाकि योनिडाक भेल । अये पामरि एछन इन्द्रक हमाक आगु बखानह ।

सूत्र०—ओहि बुलि सत्यभामा ऐछे बलल ताहे देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग वेलआल—खरमान ।

ध्रु०—पामरि हरिक करसि बड़ाइ ।
आगु चरण पंकज-रज परशि गारि देसि कति खाइ ॥

पद—ओहि जगत गुरु ब्रह्मा-रुद्र करु परि परणाम याहारि ।
कैबे दासी शची ऐछे स्वामीक कह कन्दल वयन नेहारि ॥
याहेर नाम-गुण गाइ पापी तरे भकति मुकुति मिलाये ।
ऐछे गोविन्दक निन्दस पामरि शंकर कह हरि-पावे ॥

सत्यभामा—अये दानवक बेटी इन्द्राणी, हामारि आगु तोहारि अतये बड़ाइ । हामु परम दर्प कये बहु पारिजात आनल । देखु अब तोहर स्वामी पुरन्दरक यत शकति धिक; युद्ध कय हामार हातक पारिजात निया जाउक, देखि तब सकल बड़ाइ कयलि ।

सूत्र०—देवी सत्यभामाक अतये विकर्षना वाणी शुनि शची कोपे अवसाने इन्द्रक बोलल ।

शची—हे स्वामी देवराज, तोहाक जीवन धिक धिक, मानुषी स्त्रीक अतये कदर्थना शुनि रहइछ छिः, तोहाक पुरुष तेज किछो नाहि । अः देवताक इन्द्र निछा धोलावसि ।

श्लोक

ततः पुरन्दरो देव्याः पीड़ितो वाक्यशायकैः ।
कोपेन धनुरादाय युद्धाय सन्मुखोऽभवत् ॥

सूत्र०—तदनन्तरः पुरन्दर वाक्य-शरे पीड़ित हुया शचीक गरिहा शुनि कहाँ परम कोपे धनु धरि युद्ध करिते श्रीकृष्णक सन्मुख भेलह । पेखि सारंग टंकारि श्रीकृष्ण गरुड़क कन्धे इन्द्रक समुख हुया रहल । ताहे पेखि पुरन्दर दर्पे बोलल ।

इन्द्र—अये यादव, शचीक पारिजात कैछे निया जाव । ओहि तीक्ष्णतर शरे तोहारि प्राण चोड़ावब हामाकु आगु काहा जावब ।

सूत्र०—ऐछन प्रकारे बहुत बखाल। दिव्यबाण हानि येछे दामोदर पुरन्दर दुहों महायुद्ध कयल आइ लोक ताहे देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल।

गीत

राग तुर—पड़िताल।

ध्रु०—गरजि वासव बाण प्रहारे। आजु जीव लेहु तोहारि रे॥

पद—पेखि ताइ हरि करे सारंग धरि। कर शर सत्वर मुरारि॥
भेदि प्राणगण हरलि चेतन। इन्द्रक हृदये विदारि रे॥

कथा—कृष्णक बाण प्रहारे मूर्छित होइ पुनः चेतन पाइ इन्द्र बोल।

इन्द्र—अबे श्रीकृष्ण यब पारिजात छोड़ब तब छोरह; नाहि ओहि वज्र सन्धाने तोहरि प्राण छोड़ाउँ।

कृष्ण—अबे दुष्ट देवराज, हामाक भीति देखाब, यत शकति थिक प्रहार देखि।

सूत्र०—शुनि इन्द्र वज्र धरिये पुनु स्वस्थ हया कृष्णक हानल। श्रीकृष्ण हासि हासि येछे लुम्फि धरल ताहे देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल॥

पद—स्वस्थ कलेवर पुनु पुरन्दर, धरल वज्र बीर शोभि।
हानल संधाने बाण अब लेलहुँ रह रह यादव बोलि॥

सूत्र०—बाणयुद्ध नपारि पुरन्दर परम असोपे कोपे श्रीकृष्णक वज्र प्रहारल। हरि हसि वज्रक लुम्फि धरल।

श्लोक

ततः कृष्णो दधार चक्रं शक्रं प्रति गृहीतवान्।
इन्द्रो भीत्याभ्यद्रवत्तं स पश्चाद्दीपयन् ययौ॥

कृष्ण—अबे दुष्ट देवराज, यब तोहारि प्रहार हामु सहल, अब हामार प्रहार सम्बरह।

सूत्र०—ओहि बुलि परम प्रारम्भे इन्द्रक लागि चक्रतोलि धरल। ताईक देखि इन्द्रक हृदय कम्प लागल। हात पाव थिर नोहे; महा भये हस्ति चाढ़ि लवड़ि पलावल। ताहे पेखि श्रीकृष्ण हासि हासि पाछु पाछु येछे इन्द्रक खेदल ताइ देखह शुनह। निरंतरे हरि बोल।

गीत

राग कानड़ा—पड़िताल।

ध्रु०—प्राणरे कातरे इन्द्र पलाइ। पाछु पाछु हासि माधवे धाइ॥

पद—रे रे पुरन्दर डाके मुरारि। रह रह काहे पलायब वज्रधारी॥
लवरे वासव पाछु नीचाइ। कृष्णक किंकरे शंकरे गाइ॥

सूत्र०—रह रह इन्द्र बोलि डाकि डाकि श्रीकृष्ण पाछु पाछु धाइ, तथापि इन्द्र विभंगे पलाइ, रहये नाहि। ताहे पेखि देवी सत्यभामा कदर्थना करि कहुँ हासि बोलल॥

सत्यभामा—आहे पुरन्दर, तुहुँ कि निमित्ते पलावल? देवक राजा हुया मानुष कृष्णक भये भंग देलह, उचित नहे। तोहारि आगु पारिजातक मंजरी परिधान करिते शची लालबेश करि वेड़ाबे। तुहुँ वज्रधर बीर अब केबे पलाय? लाजक पिठि देलह। अये पापरि शची ओहि इन्द्रक देखाय अतये दर्प कयलि, अब तोहारि भतारक केछे नाहि पलाइावा? हामु मानुषी हया तोहारि पारिजात निया जाउँ, ओहि तापे मरिते न जान?

श्लोक

ततः पुरन्दरो निन्दां देव्याः श्रुत्वातिदुःखदाम्।
निवर्त्यैवाब्रवीद्वचनं सत्यभामे निबोध मे॥

सूत्र०—तदनन्तर देवीक निन्दा शुनिये इन्द्र परिअर्त्ति बोलल।

इन्द्र—अये सत्यभामा, ओहि श्रीकृष्णक यह पत्नी थिक ताहेक मध्ये तुहुँ बड़ि प्रचण्ड प्रगल्भा हया हामु जानलु कि निमित्त हामाक अतये कदर्थना करइछ? देखु ओहि कोटि कोटि ब्रह्माण्डेश्वर, ब्रह्मा, महेश सेवित पाद पंकज जगतक परम गुरु नारायण श्रीकृष्ण। ताहेत हामु युद्ध हारल, इहात कोन लाज थिक? तुहुँ स्त्री जाति किछो बुझये नाहि, हामाक मिछा बखाह।

सूत्र०—ओहि बोलि इन्द्र आपुनाके गरिहा कयल।

इन्द्र—हा हा हामु पापी, माया मोहित हुया परम ईश्वरक युद्ध कयल! हामाके धिक्कार होक।

सूत्र०--ओहि बोलि भये कम्पित तनु थाकि नाहि बोलि कर योरि कृष्णक आगु दंडवते पड़ि परणामे स्तुति बोलल।

पयाड़

जय जय यादव देव-मुरारि। जय जय कंस केशी अन्तकारी॥
जय जय गिरि गोवर्द्धनधारी। जय जय भकत भीति भय हारी॥
जय जय मर्दित विषधर कालि। जय जय बामन बलिक निकालि॥
जय जय निर्जित कपिश्वर बाली। जय जय बासुदेव बनमाली॥
जय जय त्रिभुवन अनुपाम। जय जय निज जन पूरण-राम॥
जय जय अरिष्टक मोरण राम। जय जय पातेक तारेक नाम॥
तोहारि माया-मोहित अन्ध। कयलु युद्ध देव हामु मन्द॥
अत अपराध सहब हरि मोर। चरणे शरण लेलु अब तोर॥
ओहि इन्द्र पद आपद घोर। दूर कर हरि कुमति मोर॥
मागबो भिक्षा परिधान कय कंथा। धरबो तोहारि भकतिक पंथा॥

सूत्र०--ओहि स्तुति करिये पुरन्दर परम वैराग्ये कृष्णक आगु परि बहुत बिलाप कयल।

श्लोक

दृष्ट्वा कृष्णो विहस्याह तस्य तस्मिंस्तमनः।
सन्तुष्यसि यतो देव ज्येष्ठभ्राता भवान्मम॥

सूत्र०--तदनन्तर इन्द्रक भीतिकातर देखिये श्रीकृष्ण हासि हासि हाते धरि कहौं तोलि आश्वास बोलल।

कृष्ण--हे पुरन्दर, तुहो हामार ज्येष्ठ भ्राता तोहारि दोष हामु किछो धरबे नाहि। किछो नाहि करबो, धरु तोहाक वज्र लेहु। ओहि पारिजात यदि सुखे नाहि देब तव यहाक निया जाय।

सूत्र०--शुनि सत्यभामा कोप कटाक्षे निरेखि कृष्णक दशन चर्बि मने गरिहय।

सत्यभामा--हा हा कि भेलि स्वामीक मति! ओहि इन्द्रक चाटु शुनल। बारबार नरकवध निमित्ते कत कातर कये आनि कार्यसिद्ध भेल देखि हामाक युद्ध भेजायल। उनिकर वचने संजात धिक! अः हामार पारिजात दिते कोन अधिकार रहे।

इन्द्र--हे स्वामीकृष्ण, ओहि पारिजात तुहुँ निया जाव। सुधर्मा सभा सहित यत सम्पति हामात थिक सब द्वारकाक लागि पठावें। यावत तुहो भूमित रहब तावत उपभोग हुया रहोक।

श्लोक

इन्द्रस्य वचनं श्रुत्वा प्रीतिः पीताम्बरो ययौ।
पारिजातं तदादाय तमनुज्ञाप्य भार्यया॥

सूत्र०--इन्द्रक सन्माव शुनि श्रीकृष्ण भार्या सहित हरिये पुरन्दरत अनुमति पाइ येहे पारिजात लैया कौतुके केशव चलल, आहे लोक ताहे देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल।

गीत

राग बेलोआर--परिताल।

ध्रु०--पारिजात लैया चलल लयलासे
हासे हरिये बरनारी।
मत्त गज-गामिनी कामिनी कोले
भोले चलयि मुरारि॥
श्याम मुरति लान उरे माला
मणि मंजीर सुरावे।
पुष्प समे चले रंगे तरुणी करिणी संगे
मातंग येछे लीलाये॥
मकरि कुण्डल गन्द दोलि विराजति
राजीव लोचन स्वामी।
कृष्ण किंकर कहई हरिको
चरणे परि परणामि॥

सूत्र०--तदनन्तर देवी सत्यभामा सहित लीलाये कौतुके केलि कये श्रीकृष्ण द्वारिकापुर प्रवेश भेल। कृष्णक विजय सुनिये द्वारकात महामहोत्सव मिलल। ठाने ठाने जय-बाजन बजावल। स्वामी युद्ध जिनि आवल शुनि रुक्मिनी सखी सब

सहित आसि कहुँ सबटे परणाम करथि। कृष्ण आलींगि आश्वासल। रुक्मिणी सखी सबे कृष्णक एकपाशे रहल। सत्यभामा गर्ब्ब करे कहुँ रुक्मिणीक बोलल।

सत्यभामा—हे विदर्भराज-कुमारी, तुहुँ स्वामीक थाने गोटा एक पारिजात पुष्प पावल। देखु देखु यावत सोहि पारिजात तरु समूले उपारि कृष्णक हाते नाहि आनल, तावत छाड़लो नाहि। हामार सौभाग्यक पेखो पेखो।

श्लोक

निशम्य सत्यभामाया भार्ब भिष्मकनन्दिनी।
प्रोवाच भक्तेर्महिमां वर्णयन् रुचिराननी॥

कथा—सत्यभामाक गर्ब भाव शुनि रुक्मिणी हासि बोलल।

रुक्मिणी—अये भगिनी सत्यभामा, कि कहैछ? जगतक परम गुरु श्रीकृष्ण उनिकर चरण-सेवा करिते ब्रह्माण्ड भितरे कोन दुर्ल्लभ थिक? धर्म अर्थ काम मोक्ष चारि पदारथ हाते मिलाये तुहारि पारिजात कोन कथा?

सूत्र०—ऐछन भकतिक महिमा कहिते रुक्मिणीक प्रेम परशल। हरि-चरण-सेवाक महिमाक येछे वर्णावल ताहे देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल।

गीत

राग बसन्त—पड़िताल।

ध्रु०—अतये केछन कहासि भाषि।
हरिक भकतिक सति कोन निमिलाइ॥

पद—ओहि अरुण पद-पंकज धियाइ। मनोरथ चारि पदारथ पाइ॥
पापी पातेक तरे नाम गुण गाइ। कह शंकर हरि बिने गति नाइ॥

सूत्र०—भकतिक महिमा कहिते कुमारीक प्रेमे परशल। नयन झुराइ रहल।

श्लोक

सत्यभामा पतिं प्राह प्राह प्रभो त्वं किन्नु प्रेक्षसे।
पारिजात तरुं द्वारि रोपणं कुरु मेहरे॥

सत्यभामा—हे स्वामी कृष्ण, कि निमित्त तुहुँ अपेक्षा करह। हामार द्वारे पारिजात सत्वरे रोपण करह।

सूत्र०—प्रियाक बाणी शुनि श्रीकृष्ण द्वारक निकटे आपुन हाते पारिजात तरु रोपन करल। पेखि देवी बोलल।

सत्यभामा—हे स्वामी, अः कि करल? हामाक बहुत सतिनी थिक। पारिजात फुल चोरि करि निते कत कलह करि बैड़ावब। एथा नहे हामार द्वार निकटे नियां रोपण करह।

सूत्र०—शुनि श्रीकृष्ण प्रियाक मनपूरि पारिजात पुनर्ब्बार उपारि देवीक द्वार समीप रोपि थापल। तदनन्तर सत्यभामा मनोरथ पूरि श्रीकृष्ण स्वामीक परणामि सखि सबे प्रशंसा करे बहुत कौतुके कयलि।

श्लोक

साधितार्थोऽथ नाथो सः पत्नीभ्यां सह केशवः।
कौतुकी क्रीडयामास हाससंरम्भभावकैः॥

सूत्र०—तदनन्तर नरकासुर मारि, देवकार्य्य साधि, इन्द्रक जिनिये पारिजात आनि प्रियाक द्वारे रोपि कृत्य कृत्य हया श्रीकृष्ण भार्य्या दुहो सहित येछन लीला केलि कौतुके करल, ताहे देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल।

गीत

राग पुर्वी—खरमान।

ध्रु०—जगजन जीवन मधाइ।
करतु कौतुक केलि कामिनी मिलाइ॥

पद—कुंचित चारु चिकुर चिबुक धरु
कर चुम्बन बनमाली।
कांचुरि फोरे भोरे रसिक गुरु
कुच नख घन घालि॥
रमया रमणी भिलिते माणिक
मकरि कुण्डल डोले।

हीर रचित मणि मोतीम माले
हेमहार उरे लुले ॥
चरणे रतन मणि मंजीर भनके
कनक किंकिणी करो रोले ।
श्रीजगतानन्द भकति रसिकनिक
कृष्ण किंकरे ओहि बोले ॥

सूत्र०—ऐछन केलि-कला कौतुक करे श्रीकृष्ण भकता रमणी सबक मनोरथ पूरि द्वारिकापुर प्रवेशि रहल । ओहि पारिजात हरण हरिक परम लीला-चरित्र श्रद्धाये जे सब लोके शुने भणे कृष्णक चरणे ताहेरि परम भकति बढ़ायब । जानि निरन्तरे हरि बोल ।

श्लोक

कृष्णपादप्रसादेन शंकरं कृष्ण किंकरः ।
चकार श्रीपारिजातहरणं नाम नाटकम् ॥

मुक्तिमंगल ॥ च्छपय छन्द ॥ भटिमा ॥

जय जय जग - जीवन मुरारि । कंस - केशी - बक - अघ - अन्तकारी ॥
सो व्यापक बिभू ब्रह्म अधिकारी । भुकुति मुकुति नित्य करतु तोहारि ॥
जय जय परम पुरुष देवको देवा । ब्रह्मा महेश करु जो पद सेवा ॥
सोहि नारायण भुवन आधारी । भुकुति मुकुति नित्य करतु तोहारि ॥
जय जय माधव धेनुक मारी । आनन्द बिरिन्दा बिपिन - बिहारी ॥
सोहि गोपाल गोवर्द्धनधारी । भुकुति मुकुति नित्य करत तोहारि ॥
जय जय पीताम्बर बनमाली । कालिन्दी ह्रदे जो मर्दल कालि ॥
सोहि गोविन्द भकत - भयहारी । भुकुति मुकुति नित्य करत तोहारि ॥
जय जय दुष्ट दैत्य अन्तकारी । कुबलय मोहन दन्त उपारि ॥
शरत रमब जोहि गोपिनी नारी । भुकुति मुकुति नित्य करत तोहारी ॥
श्रीजगतानन्द दलपति जान । हरिको पद - पंकज भजमान ॥
करावत नाट ओहि बहु छन्दे । कृष्णक भकति करिते प्रबन्धे ॥

पारिजात हरण आहेरि नाम । शुन बुधजन हरिगुण अनुपाम ॥
कलियुग मध्ये धरम ओहि सार । नाहि नाहि गति हरि बिने आर ॥
कवलि कलि देखु एकाकार । पाप - पुण्य किछो नाहि बिचार ॥
मन्दमति लोक अबहु नाहि जानि । नाहि नाहि गति बिने शारंगपाणि ॥
भज हरि चरणे छोड़हु सब आश । हरिनामे करु सुदृढ़ विशोवास ॥
धरमक उपरि राजा नाम । जानि सबहु नरे बोल राम राम ॥

—:※:—